भगवान शिव और उनके विविध रूप

*डॉ. अनामिका शर्मा

प्रणव स्वरूप :

भगवान शिव का वेदों में, इतिहासों में, स्मृतियों में, पुराणों में अतिस्पष्ट वर्णन पाया जाता हैं, किन्तु भगवान शिव का प्रणव स्वरूप जैसा स्पष्ट वर्णन शिवपुराण में मिलता है, वैसा किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलता। एक समय भगवान शंकर कैलास पर्वत पर पार्वती के साथ विराजित थे और दीक्षा विधि के क्रम से प्रणवादि महामंत्रों का देवी से प्रसन्नतापूर्वक चर्चा कर रहे थे, तब भगवान शंकर ने पार्वती से कहा प्रणव अर्थ का ज्ञान ही मेरे स्वरूप का ज्ञान है। प्रणव स्वरूप सर्व विद्याओं का बीज है वह वेदों का आदि तथा सार है एवम् मेरा स्वरूप है। इसी कारण से प्रणव से शिवजी सर्वप्रथम जगत् का निर्माण करते हैं जो प्रणव है वह शिव है। जो शिव है, वह प्रणव है। स्वयं शिवजी कहते हैं –

ब्राह्मादिस्थावरान्तानां सर्वेषां प्राणिनां खलु।

प्राणः प्रणव एवायं तस्मात् प्रणव ईरितः।

अर्थात् ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त सम्पूर्ण प्राणियों का यह प्रणव ही प्राण है, इससे इसको 'प्रणव' कहते हैं।

भगवान शंकर ने कहा है – ''ऊँ'' कार मेरे मुख से उत्पन्न होने के कारण मेरे ही स्वरूप का बोधक है, यह वाच्य है, मै वाचक हूँ, यह मन्त्र मेरा आत्मा है, इसका स्मरण करने से मेरा ही स्मरण होता है। मेरे उत्तर की ओर के मुख से अकार, पश्चिम के मुख से उकार, दक्षिण के मुख से मकार, पूर्व के मुख से बिन्दु और मध्य के मुख से नाद उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार पाँचों मुखों से निर्गत हुए इन सबसे 'ऊँ' यह एकाक्षर बना है। सम्पूर्ण नाम–रूपात्मक जगत्, स्त्री पुरुषादि भूत समुदाय एवं चारों वेद– सभी इसी मन्त्र से व्याप्त हैं, और यह शिवशक्ति का बोधक है।

इस प्रकार भगवान शिव का ऊँकार स्वरूप सर्वाधिक अलौकिक है। प्रणव रूप शिव का सदा जाप करने वाला महायोगी समाधि में स्थित होकर शिव रूप हो जाता है।

'शिव एव न संशयः'।

लिंगस्वरूप –

वेदों में शिवतत्त्व के लिये कहा गया है सर्वाधिष्ठान, सर्वप्रकाशक और परब्रह्म परमात्मा वहीं सच्चिदानन्द परमात्मा अपने आप को प्रकट करता है। समस्त प्राणियों में जितनी वस्तुएँ प्रकट होती हैं उनको प्रकट करने वाली माता प्रकृति हैं, और पिता शिव है अर्थात् लिंग रूप है।

प्रकृतिपार, सौन्दर्य–माधुर्यसार, आनन्दरस सार परमात्मा में ही शिव–पार्वती–भाव बनता है। अनन्तकोटिब्रह्माण्डोत्पादिनी अनिर्वचनीय शक्तिविशिष्ट ब्रह्म में भी शिव–पार्वती–भाव है। उसी परमात्मा में लिंग योनि भाव की कल्पना है।

'गीता' में भी प्रकृति को परमात्मा की योनि कहा गया है–

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भ दधाम्यहम्।

संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।।

'शिवपुराण' में लिंग शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया हैं –

लिंगमर्थं हि पुरुषं शिवं गमयतीत्यदः।

शिवशक्त्योश्च चिह्नस्य मेलनं लिंगमुच्यते।।

अर्थात् शिवशक्ति के चिन्ह् का सम्मेलन ही लिंग है। यह लिंग परमार्थ व शिवतत्त्व का बोधक है। प्रणव को भी भगवान का ज्ञापक होने से लिंग कहा गया है।

माघ कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि के दिन कोटिसूर्य के समान परम तेजोमय शिव लिंग का प्रादुर्भाव हुआ। निष्कल होने से शिव का निराकार लिंग ही पूज्य होता हैं। सकल होने से साकार पूज्य होते हैं अर्थात् कहने का अभिप्राय है कि शिव सकल और निष्कल दोनों रूपों में है। अतः निराकार और साकार लिंग दोनों ही पूजनीय हैं। शिवलिंग से ही समस्त विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और अन्त में उन सबका लय उसी में होता है। एक दृष्टि से चिन्ह् को लिंग कहते है। प्रकृति में स्थित निर्विकार बोधतत्व शिव है।

लिंगार्चन तन्त्र में वर्णन आया है कि एक समय देवी पार्वती ने भगवान् शंकर से प्रश्न किया कि इन्द्रियों से रहित देव शून्य रूप है, उसका कोई आकार नहीं है, उस शून्य के पूजन से क्या फल? शिवजी ने कहा – 'महेशानि! शक्ति शून्य शिव शव या प्रेत के ही समान है। उसकी पूजा नहीं बन सकती, किन्तु रौद्री शक्तिसहित ही उनकी पूजा होनी चाहिये। वही ब्रह्मा–विष्णु–शिवात्मिका आद्याशक्ति सार्धत्रिवलया (साढ़े तीन फेरे की) कुण्डलिनीरूपा है। वह शिव तत्त्व को अपने साढ़े तीन फेरे से वेष्टित किये हुए है। उसी शक्ति के संयोग से शिव अनन्त ब्रह्माण्ड का उत्पादनादि कार्य करते हैं। वहीं कुण्डलिनी योनि है, उससे परिवेष्टित शिव लिंग है। यही अपर्णालता–परिवेष्टित स्थाणु भी है, अपर्णा पार्वती योनि है, कूटस्थ ब्रह्म ही स्थाणु, ठूँठ या लिंग है।

(६-८ अध्याय) 'स्कन्दपुराण' में कहा गया है कि बिना लिंग पूजन के अमंगल होता हैं –

बिना लिंगार्चनं यस्य कालो गच्छति नित्यशः।

महाहानिर्भवेत् तस्य दुर्गतस्य दुरात्मनः।।

एकतः सर्वदानानि व्रतानि विविधानि च।

तीर्थानि नियमा यज्ञा लिंगाराधनमेकतः।

भुक्तिमुक्तिप्रदं लिंग विविधापन्निवारणम्।

शिव लिंग की पूजा अनादिकाल से होती आई है। इस प्रकार अनादि, अपौरुषेय, सर्वपूज्यरूप, अर्धनारीश्वर, लिंगरूप शिव उपास्य है। उन्हीं भगवान शंकर का जप और तप मंगलकारी है। उनको लिंग रूप स्मरण से मंगल की प्राप्ति होती है।

अर्धनारीश्वर स्वरूप :

भगवान् शिव के अनेक रूपों में अर्धनारीश्वर रूप सर्वोंतम है। सत्, चित् और आनन्द ईश्वर के इन तीनों रूपों में आनन्द रूप जिसका दूसरा नाम साम्यावस्था है, वह भगवान् शिव का है। एक दूसरी दृष्टि से ईश्वर का सत् स्वरूप उनका मातृ स्वरूप है, और चित् स्वरूप पितृ स्वरूप है, और तीसरा आनन्द स्वरूप वह है, जिसमें मातृ भाव और पितृ भाव दोनों का पूर्णरूप से सामT्य हमारे सामने आता है। सत् और चित् के पूर्ण संयोग से अर्धनारीश्वर विग्रह में सच्ची समता उत्पन्न हुई है, इसमें पुरुष व प्रकृति के संयोग द्वारा माया के आवरण को भेद कर आनन्द रूप पूर्णता को प्राप्त कर लेता है, तब सारे विरोध मिट जाते हैं, और मनुष्य उस स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ न पुरूष, न प्रकृति, न स्त्री, न पुरूष–केवल अद्वितीय वस्तु 'एकमेवाद्वितीयम्' ही शेष रह जाती है। वही अनन्त आनन्द की मूर्ति अर्धनारीश्वर शिव है।

मंगलमूर्त्ति रूप शिव :

सृष्टि के समस्त उद्योगों का उद्देश्य सुख की प्राप्ति है। भगवान् कृपा से विजय प्राप्ति होती है। भगवान् सदाशिव साक्षात् धर्म की मूर्ति है, उनके स्मरण से सुख की प्राप्ति होती है।

भवभक्ति परा ये च भवप्रणतचेतसः।

भवसंस्मरणा ये च न ते दुःखस्य भाजनाः।।

'जो भगवान् शिव की भक्ति में तत्पर हैं, जो मन से उन्हीं के शरणागत हैं तथा उन्हीं का चिंतन करते हैं, वे कभी दुःख के भागी नहीं होते।'

श्रुति, स्मृति, पुराण और इतिहास के अनेक स्वर्णिम पृष्ठ चन्द्रार्धभूषण के अनादि–अनन्त, परमोपास्य, परात्पर, शोक संताप–निवारक, परमैमर्यशाली होने के प्रमाण से भरे पड़े हैं। मंगल की आकांक्षा रखने वाले जनों को शिव की उपासना अवश्य करनी चाहिये, क्योंकि वे अद्वितीय हैं –

नास्ति शर्वसमो देवो नास्ति शर्वसमा गतिः।

नास्ति शर्वसमो दाने नास्ति शर्वसमो रणे।।

चार पुरुषार्थों में अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष है, जीवन भर भौतिकवादी प्रयास बिना मोक्ष के निष्फल हो जाते हैं। मानव मोक्ष के बिना नाना प्रकार के क्लेषों से आवृत्त रहता है। परम कष्टहारि वृषभध्वज की शरण आवागमन के छुटकारे का सरलतम उपाय है। 'शिवपुराण' में कहा गया है–

'ब्रह्मा का निर्माण कर उन्हें श्रुतियों के ज्ञान से समलंकृत करने वाले तथा स्वरूप–विषयक बुद्धि को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर शिव को जानकर इस घोर संकट से मुक्त होने के लिये उनकी शरण ग्रहण करता हूँ।'

ब्रह्माणं विदधे पूर्व वेदांचोपादिशत् स्वयम्

यो देवस्तम्हं बुद्धवा स्वात्मबुद्धि प्रसादतः

मुमुक्षुरस्मात् संसारात् प्रपद्ये शरणं शिवम्।।

भगवान् त्रिलोकेश्वर, भूतभावन सदाशिव विषपान करके हमेशा के लिये नीलकण्ठ बन जाते हैं। चिरंतन, अनादि, सदाशिव के विषय में स्वयं युग अवतार श्री कृष्ण भी अपने श्रद्धा भाव को व्यक्त करते हैं।

त्वत्परो नास्ति मे प्रेयांस्त्वं मदीयात्मनः परः।

ये त्वां निन्दन्ति पापिष्ठा ज्ञानहीना विचेतसः।

पच्यन्ते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरौ।।

देव ! मेरा आपसे बढ़कर कोई प्रिय नहीं है। आप मुझे अपनी आत्मा से भी अधिक प्यारे हैं। जो दुष्कर्मों में रत अज्ञानी एवं बुद्धिहीन पुरुष आपकी निन्दा करते हैं, वे अनन्तकाल तक नरक में पचते रहेंगे।

प्राणीमात्र के मंगल की कामना करने वाले भगवान् मंगलमूर्त्ति महादेव की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है। उनका यह रूप आनन्द देने वाला है।

संहार रुपक शिव

भगवान् शिव में शिवतत्त्व है। तथापि उनमें संहारक शक्ति विशेष रूप से अधिष्ठित है, और उसी शक्ति के कारण सर्वाधिक प्रसिद्ध देवता है।

तन पर वस्त्र नहीं, लँगोटी के लिये कपड़ा नहीं। शरीर पर भस्म व सर्प लिपटे हुए, कंकाल की माला लिपटी हुई और निवास श्मशान हैं। फिर भी उनका नाम शिव है। शिव का दूसरा नाम 'रुद्र' है। 'रुद्र' का अभिप्राय दुष्टों को रुलाने वाला है। इसलिए 'रुद्र' है। वैदिक शब्दों में शिव को 'त्र्यम्बक' कहते है। संसार में ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम, ऊँ है। उसमें तीन अक्षर है 'अ, उ, म्' ये तीनों शक्ति के प्रतीक हैं।

योग विद्या के प्रर्वतक, नृत्यविद्या के उत्पादक, व्याकरणशास्त्र के संचालक, शिव का ब्राह्यरूप भले ही भयंकर हो, किन्तु उनकी सब कृतियां शिवकारक हैं।

नीलकंठ स्वरूप

भगवान् शिव देव होने के बाद भी अन्य सभी देवों से अलग है भगवान शिव ही ऐसे देव हैं जिन्होंने समुद्रमंथन के समय सागर के गर्भ से निकले हालहल को गले में धारण कर समस्त सृष्टि की रक्षा की और नीलकंठ कहलाये।

सर्वशक्तिमान अथवा जटाधारी स्वरूप

सागर के पुत्रों को जीवनदान देने के लिये जब भागीरथ ने तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर आने के लिये राजी कर लिया, तो गंगा के वेग को भी उन्होंने ही अपनी जटाओं में धारण किया भागीरथ को गंगाजी ने आश्वस्त कर दिया था कि वे पृथ्वी पर आने और सगरपुत्रों को जीवित करने के लिये तैयार है किन्तु आकाश लोक से पृथ्वी पर आते समय उनका वेग इतना प्रचण्ड हो जायेगा कि अगर उसे रोका न गया तो पृथ्वी का सीना चीरते हुए पाताललोक में चली जायेगी। इसके बाद पृथ्वी पर आना असंभव ही होगा। उस समय किसी देव में ऐसी सामर्थ्य नहीं थी कि वे गंगा के वेग को धारण कर सके, सबको भय था कि गंगा के वेग को न रोक पाने की स्थिति में वे भी उसके साथ पाताल लोक में समा जायेंगे। तब शिव ही एकमात्र ऐसे देव थे जो इस असंभव कार्य को संभव कर सकते थे और उन्होंने गंगा के वेग को अपनी जटाओं में धारण कर लिया और जटाधारी हो गये।

तारणहार स्वरूप तथा भोलेनाथ स्वरूप

अन्य देवों की अपेक्षा भगवान् शिव भौतिक सुखों एवं सुखों की आसक्ति से हमेशा दूर ही रहे। वे हर समय देवताओं एवं मानवों की दानवों से रक्षा–सुरक्षा के लिये उद्यत रहे। सामान्य अवस्था में सौम्य एवं शांत तथा क्रोध की मुद्रा में ताण्डव करते दिखाई देते हैं। तीसरा नेत्र विनाश के द्वार खोलता है तो उनके छोटे से जपमंत्र से साधक अनेक समस्याओं से मुक्त हो जाते हैं।

हर दृष्टिकोण से भगवान् शिव हम सब के लिये तारणहार बने दिखाई देते हैं ? सभी को कष्टों से मुक्त कर देते हैं, तो दूसरे रूप में दानवों राक्षसों का विनाश कर देते हैं। भगवान शिव की पूजा–साधना से एक ध्वनि गूंजती है सबका कल्याण हो। भगवान शिव जो अपने समस्त सुखों–भोगों को छोड़कर पूर्व वैराग्य भाव से तप में लीन हो, वह निश्चय ही सब लोकों के कल्याण के बारे में ही करते होंगे। जो करूणा से भरा होगा, वही दूसरों के कल्याण के लिये सोच सकता है और भगवान शिव तो वास्तव में करूणा के सागर ही है। सम्भवतः इसी कारण से उन्हें भोलेनाथ कहा जाता है।

आशुतोष स्वरूप

देश भर में सबसे अधिक संख्या में शिवजी के ही मन्दिर है, भगवान् शिव की पूजा–अर्चना के विशेष दिवस भी अन्य समस्त देवों की तुलना में अधिक होता है, पूरा श्रावण मास की पूजा उनके स्वरूप के साथ–साथ उनके चिन्ह शिवलिंग की पूजा का विधान है, ऐसा किसी अन्य देवी–देवता के संदर्भ में नहीं मिलता है। ऐसा किसी अन्य देवी–देवता के संदर्भ में नहीं मिलता है, इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि एकमात्र भगवान् शिव ही ऐसे देव हैं जो सामान्य पूजा से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। अन्य पूजाओं में जितने साधनों एवं उपक्रमों की आवश्यकता होती है, उतनी शिव पूजा में नहीं होती है। शिव की मानसिक पूजा को भी उतना महत्व प्राप्त है जितना महत्व विभिन्न साधनों द्वारा की जाने वाली पूजा का होती है। भगवान् शिव को अशक्त अवस्था में भी कुछ भी अर्पित किया जा सकता है, चाहे वह स्थान देवालय न होकर कोई भी हो। शिव को अर्पित करने वाली वस्तु से शिव को अर्पित करने का तात्पर्य शिवार्पण है, उस वस्तु को प्राप्त करने का कार्य शिवजी का है, उसका पूरा फूल अर्पण करने वाले प्राप्त होता है। भगवान शिव को भोलेनाथ कहा जाता है। वे साधक की पूजा से शीघ्र प्रसन्न हो, उसे वांछित फल का वरदान देने में विलम्ब नहीं करते हैं इसलिये **आशुतोष स्वरूप** कहलाते हैं। सम्पूर्ण भारत में द्वादश ज्योतिलिंग भगवान शिव की पूजा–उपासना के ऐसे केन्द्र है, जहां विश्वभर से हिन्दू–सम्प्रदाय के लोग आकर भगवान् शिव का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और शिव के द्वारा आने के पश्चात् उनकी समस्त कामनाओं की पूर्ति एवं दुःख–कष्टों की निवृत्ति होती है। भगवान शिव जैसा चरित्र किसी देवी–देवता में देखने को नहीं मिलता, भगवान शिव ही साक्षात् मृत्यु सुख में जाते हुए व्यक्ति को दीर्घायु तथा अच्छे स्वास्थ्य का वरदान देते हैं।

***संस्कृत विभाग**
महर्षि दयानंद सरस्वति विश्वविद्यालय,
अजमेर (राज.)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कैलास संहिता, अध्याय–३, श्लोक–१४
2. शिवपुराण विद्येश्वर संहिता ८/१६/२०

3. शिवपुराण विद्येश्वर संहिता, अध्याय–१७/२५
4. गीता १४/३
5. शिवपुराण, विद्येश्वर संहिता, अध्याय–१६/१०७
6. शिवपुराण : रुद्र संहिता, सृष्टि खण्ड, अध्याय १२, श्लोक २१
7. महा. भा., अनु. २५/११
8. शिवपुराण वा. स. पू. ख. ४/५५
9. ब्रह्मवैर्वत पुराण ६/३१